नाम : डॉ॰ सुजाता कुमारी
विभाग :- हिंदी
वर्ग :- स्नातक प्रथम खण्ड (प्रतिष्ठा)
पत्र :- I
शीर्षक :- भक्तिकाल में 'कृष्णभक्ति शाखा'
दिनांक :- 06.05.2020

कृष्णभक्ति शाखा : [भक्तिकाल]

महाप्रभु वल्लभाचार्य ने भागवत धर्म के आधार पर कृष्णभक्ति शाखा की नींव रखी और संपूर्ण भारतवर्ष में इसका प्रचार किया। वल्लभाचार्य के अनुसार जीव तीन प्रकार के है — (i) प्रवाह जीव (ii) मर्यादा जीव और (iii) पुष्टि जीव। वल्लभाचार्य ने देश के विभिन्न क्षेत्रों में घूम घूमकर जनसंपर्क और शास्त्रार्थ किया। फिर श्रीकृष्ण के जन्मभूमि में गोवर्द्धन पर्वत श्रीनाथ जी का विशाल मंदिर बनवाया।

हिंदी साहित्य का कृष्णभक्ति काव्य, कृष्ण की लीलाओं पर आधारित है। यह मुख्यत: राधा-कृष्ण, गोप-गोपियों का वर्णन, कृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन करता है। यह मुख्यत: श्रृंगार रस (संयोग एवं वियोग रस) का वर्णन है।

कृष्णभक्ति शाखा के सबसे लोकप्रिय कवि के रूप में 'सूरदास' को जाना जाता है। इन्हें श्रेष्ठ कृष्णभक्त भी कहा जाता है। वल्लभाचार्य से प्रेरित होकर इन्होंने कृष्ण-काव्य की रचना प्रारंभ की। सूरदास ने वात्सल्य और श्रृंगार को सामने रखा है और उन्हें लोकसामान्य की भावभूमि पर जीवन्त कर दिया है। संभवत: वात्सल्य के क्षेत्र में उनके समकक्ष कोई नहीं ठहरता। सूरदास ने

Scanned with CamScanner

कृष्ण की बाललीलाओं का वर्णन बहुत ही मनोवैज्ञानिक एवं स्वाभाविक रूप से किया है। अपनी रचनाओं में प्रकृति एवं जीवन के कर्म को अद्भुत कौशल के साथ चित्रित किया है। कृष्ण के ऊपर रचित उनके काव्य भगवन की बाल-क्रियाओं के स्वाभाविक मनोरम चित्रों का भंडार है, जहाँ वे एक सामान्य बालक की भाँति हठ करते हैं। कृष्ण चलना सीख रहे हैं, यशोदा हठ करके, उनका हाथ पकड़कर चलना सीखा रही हैं :—

सिखवत चलन जसोदा मैया
अरबराय करि पानि गहावति डगमगात धरै पैयाँ।

सूरदास के काव्य में लीला वर्णन इतना सजीव है, मानों यह सारा दृश्य ही मन में रच-बस जाता है। सूरदास के शृंगार वर्णन में अजब-सी मादकता रहती है। सूरदास की प्रसिद्धि का मुख्य आधार उद्धव-गोपी संवाद का प्रसंग 'भ्रमरगीत' भी है। जिसमें श्रीकृष्ण का ब्रज छोड़कर मथुरा चले जाना गोपियों को तनिक भी नहीं सुहाता, वे विरह-वेदना से अत्यंत व्याकुल हो उठी हैं। श्रीकृष्ण अपने सखा उद्धव को ज्ञान और योग के उपदेश के माध्यम से उन्हें (गोपियों को) समझाने भेजते हैं। मगर गोपियाँ इस उपदेश को सुनने और ग्रहण करने को कतई तैयार नहीं हैं। वे प्रेम और भक्ति को छोड़कर ज्ञान-उपदेश के मार्ग पर नहीं चलना चाहतीं। इस प्रसंग के माध्यम से कवि ने निर्गुण उपासना का भी खंडन किया है :—

निर्गुन कौन देस को बासी।
को है जननि जनक को कहियत कौन नारि को दासी॥

सूरदास के यहाँ राधा-कृष्ण का प्रेम परिचय से प्रारंभ होकर प्रकृति की पृष्ठभूमि में पल्लवित होता है। राधा-कृष्ण के प्रेम में गायें, प्रकृति, ग्वाल-बाल, गोपियाँ सभी का प्रमुख स्थान है। राधा कृष्ण का प्रेम एक सहज मानव जीवन की उष्णता, उत्कट आकांक्षा

Scanned with CamScanner

का वर्णन है। मध्यकालीन स्त्रियों की (लोक-लाज छोड़कर कृष्ण की बाँसुरी पर गोपियों का सब-कुछ छोड़कर जाना) सामाजिक व्यवस्था की से मुक्ति की चाह को भी व्यंजित करती हैं। 'सूरसागर' में इसी प्रकार का वर्णन मिलता है। "रास-लीला सुख विभोर मानवता का सजीव और गतिमय स्पंदित चित्र है।"

वल्लभाचार्य के पुत्र ने 'पुष्टिमार्गी' कवियों में से आठ को चुनकर उन्हें 'अष्टछाप' की संज्ञा दी। ये कवि हैं — सूरदास, कुंभनदास, परमानंद दास, कृष्णदास, छीतस्वामी, गोविंद स्वामी, चतुर्भुजदास और नंददास।

नंददास के यश का आधार 'रासपंचाध्यायी' है और रोला छंद में रचित है। कृष्ण की लीलाओं का वर्णन अधिकांश सभी अष्टछाप के कवियों ने की है। राधा और कृष्ण के रूप एवं शृंगार के साथ-साथ उनके चरित्र का गुणगान करना भी प्रमुख रहा है।

अन्य कृष्ण भक्तियों में मीराबाई, रसखान, आदि आते हैं। विद्वानों ने रहीम की गणना भी कृष्णभक्तों में की है। यद्यपि इनके नीतिपरक दोहे इनकी प्रसिद्धि का प्रमुख कारण है।

★ मीराबाई महाराणा सांगा की पुत्र-वधु और महाराणा कुमार की पत्नी थी। पति की मृत्यु के उपरांत ये भजन-कीर्तन करने लगी। सामाजिक मर्यादा और लोक-लाज को किनारे रखकर इन्होंने कृष्ण की अनन्य भक्ति की। लोकाचार को तज कर इन्होंने अपना घर छोड़ दिया। और कृष्ण की भक्ति में ही संपूर्ण जीवन उत्सर्ग कर दिया।

"मेरो तो गिरिधर गोपाल दूसरो ना कोइ।"

मीरा का जीवन यथार्थ इन पंक्तियों से झलकता है —

"असुँवन जल सींचि-सींचि, प्रेम बेलि बोई।"

मीरा के काव्य में प्रेम, वेदना और व्याकुलता की स्पष्ट रेखा दिखलाई देती है।

"घायल की गति घायल जाणै औ न जाणै कोय"

Scanned with CamScanner

★ रसखान :- इनकी रचना 'प्रेमवाटिका' है, जो इनके यश का आधार है। रसखान का काव्य मुख्य रूप से सवैयों में है। यह छंद इन्हें सिद्ध था, जिसकारण इनका काव्य सरस तथा प्रवाहमय है। ये मूलत: कृष्ण की लीलाओं को ध्यान में रखकर काव्य की रचना करते थे।

कृष्णभक्ति काव्य ब्रजभाषा में रचा गया है। इसके अधिकांश पदों में गेयता के गुण, संगीतात्मकता है। हिंदी का कृष्णभक्ति काव्य कृष्ण की लीला पर, राधा-कृष्ण के प्रेम-सौंदर्य, गोप-गोपियों, बाल-सखा, गायें, प्रकृतिक सुषमा, रासलीला आदि पर आधारित है। इनकी प्रसिद्धि का प्रमुख कारण लोक-जीवन पर आधारित सामान्य व्यवहार है।

यह काव्य मुख्यत: गेयपदों, कवित्त, सवैयों, में रचा गया है।

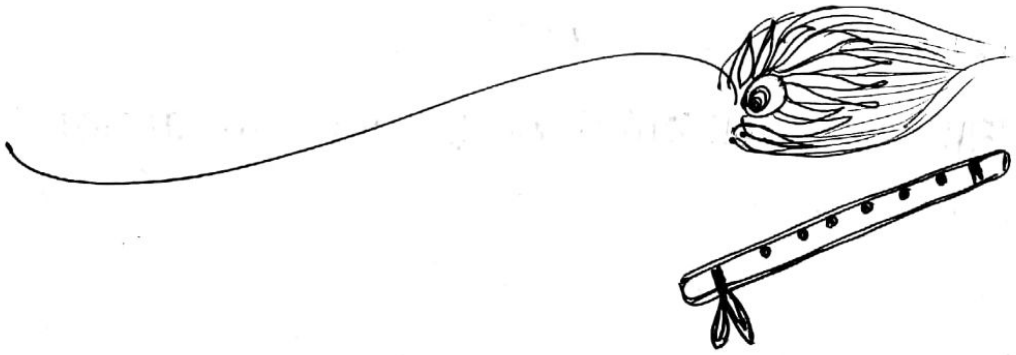

Scanned with CamScanner